RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-02
February -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

हिन्दी साहित्य में नारी की स्थिति : आज और कल

[1]डॉ॰ गिरधर लाल शर्मा [2]नीरज रानी
[1]एसोसिएट प्रोफेसर, ओपीजीएस विश्वविद्यालय, चुरू
[2]शोध छात्रा हिन्दी

नारी ने मानव जीवन के सभी क्षेत्रों को अपनी दया, करुणा, माया, ममता, मधुरिमा, विश्वास एवं समर्पण से संपूर्ण मानव जीवन को खुशहाल कर दिया है । आज हम किसी भी स्थिति में नारी को पाएं नारी हमें एक ममता की देवी के रूप में ही दिखती है । परंतु भिन्न-भिन्न काल में नारी की स्थिति में ना जाने कितने परिवर्तन हुए हैं । नारी को हमने शक्ति का स्त्रोत भी माना है और नारी को हमने समाज में चेतना जगाने के रूप में भी देखा है । जीवन के हर क्षेत्र में अगर हम देखें तो नारी की सहभागिता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है । हिन्दी साहित्य के आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, आधुनिक काल केसाथ-साथ हिन्दी गद्य साहित्य में भी नारी-चेतना का विकास हुआ है। उसका संक्षिप्तविवरण इस प्रकार अग्रलिखित हैं-

आदिकाल :

हिन्दी का आदिकाव्य वीरगाथाओं तथा धार्मिक उपदेशों के रूप में लिखा गया है। फिर भी तत्कालीन वातावरण एवं परिस्थितियों के अनुसार इस काव्य में नारी के वीरांगनाएवं कामिनी दोनों रूपों के दर्शन होते हैं। इस काल में अधिकांश साहित्य राजकुमारियों केअपहरण तथा उनके फलस्वरूप होने वाले युद्धों का वर्णन मिलता है। "इस सामन्तवादी युगमें नारी की स्थिति अच्छी नहीं थी। रासो काव्य की नायिकाओं के जीवन भी नारी-दुर्दशाकी कहानी ही कहते हैं।"1

इस काल में नारी सौन्दर्य वर्णन भी स्वस्थ मनोवृत्ति का परिचायक नहीं था। डॉ॰उषा पाण्डे का यह कथन अत्यन्त समीचीन जान पड़ता है-"वीर काव्य में भी नारी का ृंगार-सौरभ की मादकता से बोझिल स्वरूप ही दृष्टिगत होता है। उसके वीरांगना, वीरमाताऔर क्षत्राणी के प्रांजल रूप कोशृंगार की धूप ने प्रच्छन्न-सा कर दिया है।"2 तत्कालीन समाजमें नारी, बिलास की सामग्री होने के कारण पुरुष की निजी सम्पत्ति ही मानी जाती थी। मनुष्यस्वयं तो अपनी इच्छा से कई पत्नियाँ रख सकता था, किन्तु नारी के लिए पति की मृत्यु केपश्चात् सती हा जाना उसका कर्त्तव्य बना दिया गया। उपेक्षित नारीत्व इस प्रक्रिया केफलस्वरूप ृंगार की प्रेरणा बन गया था।

भक्तिकाल :

इस काल के साहित्य में नारी मुख्यत: दो रूपों में अंकित हुई एक ओर तो वहसामान्य नारी रूप में निंदा एवं उपेक्षा की पात्र रही तो दूसरी ओर आराध्य देवताओं कीसंगिनी के रूप में सम्मानित भी हुई। एक ओर तो इस युग में निर्गुणमार्गी संत कवि थे।

जिन्होंने नारी को मुक्ति मार्ग की बाधा एवं पुरुष को विनाश के पथ पर ले जाने वाली मानाहै। 'कबीर ने नारी को नरक का द्वार माना है। मलूकदासनारी के नेत्रों को भयानक कहते हैंतथा दादूदयाल संसार को पतंगा तथा कनक-कामिनी को दीपक की लौ बताते हैं।"3

दूसरी तरफ प्रेममार्गी कवि जायसी ने नारी को ब्रह्म का प्रतीक मानकर उसकीप्रशंसा की है। तुलसीदास ने नारी के प्रति घृणात्मक दृष्टिकोण के कारण ही उसे 'ढोल गंवारशुद्र एवं पसु' के सादृश्य बताया। डॉ॰ नगेन्द्र के मतानुसार, "तुलसीदास के 'रामचरितमानस'तथा अन्य ग्रन्थों के विभिन्न प्रसंगों में, ऐसी अनेक उक्तियाँ हैं, जो किसी भी देशकाल कीनारी के प्रति न्याय नहीं करती। उन्होंने नारी की प्रकृति, बुद्धि, विवेक, आचार, व्यवहार सभीकी निंदा की है।"4सूर के काव्यों में गोपियों एवं राधा के माध्यम से नारी का जो प्रेमिकारूप निरुपित हुआ है, वह प्रेममय एवं त्यागमय तो अवश्य है, किन्तु साथ ही वह एकअसहाय निरुपाय नारी का चित्र भी प्रस्तुत करता है। अत: इस काल के कवियों के नारीविषयक दृष्टिकोण में मतभेद ही रहा है। "एक ओर तो उसे मुक्ति-मार्ग की बाधा मानकरउसकी उपेक्षा की है तो दूसरी ओर सीता, पार्वती की वन्दना भी की है। एक ओर उसे नागिनव नरक का द्वार कहा तो दूसरी ओर अपनी आत्मा को भी नारी-रूप में ही अंकित कियाहै।"5

रीतिकाल :

रीतिकाल में भक्तिकाव्य की उपेक्षित नारी रीतिकालीन मुक्तक काव्य मेंआकर्षण की केन्द्र बिन्दु 'नायिका' बन गई और ये मुक्तिकार नायिका भेदोपभेद एवंनरक-शिखा वर्णन में अपनी प्रतिभा का चमत्कार दिखाने लगे।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

इन कवियों ने राधा-कृष्ण की लीलाओं का जो वर्णन किया है, उसमें भीआध्यात्मिकता की आड़ में नारी के प्रति वासना ही व्यक्त हुई है। उस विलासपूर्ण वातावरणमें नारी का केवल कामिनी एवं प्रेयसी रूप ही शेष रह गया। "यद्यपि इस काव्य में अंकितप्रेमिकाएँ अधिकांश में परीकथाएँ ही हैं, जिनमें उज्ज्वल पत्नीत्व की गरिमा को खोजने परनिराशा ही मिलती है, फिर भी, प्रिय के ध्यान में आत्मविस्मृत हो अपना ही प्रतिबिम्ब दर्पणमें देखकर रीझने वाली यह प्रेमिका रूपा नारी, प्रेमिका के उत्कर्षमय भाव-संवलित रूप काआदर्श भी प्रस्तुत करती है।"6

इन कवियों की दृष्टि न तो सीता के प्रतिव्रत पर गई, न सावित्री के सतीत्व पर,न पार्वती की पावनता पर गई और न ही यशोधा की ममतामयी मातृ-गरिमा पर! रीतिबद्धकवियों के द्वारा तो नारी के सामाजिक जीवन के महत्त्व का उद्‌घाटन हो ही नहीं पाया,रीतिमुक्त कवियों में भी उसका यह महत्त्व व्यक्त नहीं हो पाया। सभी बंधी-बंधाई लकीरपर उसके अंग-प्रत्यंग की शोभा, हाव-भाव और विलास चेष्टाओं का वर्णन करते रहे। "इससम्बन्ध में आचार्य हजारी प्रसाद के शब्द विशिष्ट रूप में अवलोकनीय है-"यहाँ नारी कोईव्यक्ति या समाज के संगठन की इकाई नहीं है, बल्कि सब प्रकार की विशेषताओं के बन्धन से यथासम्भव मुक्त विलास का एक उपकरण मात्र है। देव ने कहा है-

'कौन गनै पुर बन नगर कामिनी एकै रीति।
देखल हरै विवेक को चित्त हरै करि, प्रीति।"7

आधुनिक काल :

आधुनिक काल में सर्वप्रथम भारतेन्दु युग आता है। इस काल के कवियों कीदृष्टि नारी के विविध रूपों पर तो अवश्य गई है। किन्तु वे उसकी शक्ति के प्रति पूर्णत: आश्वस्त नहीं जान पड़ते। इस युग में नारी के प्रति परम्परागत दृष्टिकोण होते हुए भी नारीनिपट भोग्या या उपेक्षित नहीं रही। उसकी हीन-दशा के प्रति भी कवि की सहानुभूति सजगहुई और उसको आवश्यक आदर देने की दिशा में भी ये कवि अग्रसर हुए।द्विवेदी युगीन काव्य में नारी सम्बन्धो दो दृष्टियाँ मिलती हैं-"एक रीतिकाव्य केअवशेष रूप में उसी परम्परा की कड़ी में जुड़ी हुई भारतेन्दु और बदरीनारायणप्रेमधन की नायिकाएँ।"8दूसरी युग चेतना से प्रभावित गुप्त और हरिऔध के नारी चित्रण।

गुप्त जी ने नारी चरित्रों का सर्जन पुरुषों की भोग्या एवं काव्या के रूप में नहीं वरन् पुरुषकी संगिनी वाली भावना से किया है। 'साकेत', यशोधरा और 'विष्णुप्रिया' नारी प्रधानकृतियाँ हैं। गुप्त जी कहते हैं कि 'नारी को मानवतावादी मूल्य, भावनाशील दृष्टि औरसामाजिक सम्पन्नता की कसौटी पर परखते हैं।9

हरिऔध ने प्रियप्रवास के माध्यम से नारी के चरित्र की राधा रूप में प्रेम औरकर्त्तव्य भावना का अद्‌भुत सामंजस्य दिखाया है-"सामाजिक सन्दर्भों में नारी सम्बन्धीसमस्याओं-बाल-विवाह, अनमेल-विवाह, बाधिक वैधव्य पर न केवल इनका ध्यान गया वरन पीड़ित नारी के 'आक्रोश' को भी व्यक्त किया है।"10

रीतिकाल की नारी चौबीस घंटे भोग-विलास की वस्तु थी और द्विवेदी युग की नारी सती सीता और सावित्री की भांति मात्र वन्दनीया। यह बदलते हुए सामाजिक सन्दर्भोंकी देन है कि छायावादी कवियों की नारी आदर्श और कल्पना के उच्चासन पर आसीनसुकुमार भावना और पुरुष की चिरसंगिनो है। 'प्रसाद के काव्य में नारी के पत्नी, प्रेयसी,गृहिणी आदि का चित्रण भी मिलता है। इन्होंने नारी के सौन्दर्य का सर्वथा नवीन, मौलिक,स्वर्गिक, प्रकृति के अनूठे उपमानों से भरा रूप चित्रित है। प्रकृति में नारी रूप को समाहितकर उदात्त भावभूमि प्रदान की है।"11

निराला यह मानकर चलते हैं कि 'नारी का सौन्दर्य रीतिकालीन कवियों केमांसल चित्रण में सीमित नहीं वरन् विस्तृत, दिव्य और रमणीय है।"12इन कवियों ने नारी काभाव-चित्रण ही किया है, नारी सम्बन्धी अपनी मानसिक प्रतिमा का ही निर्माण किया है।इसलिए इनकी नारी वस्तुनिष्ठ न होकर आत्मनिष्ठ है, मांसल न होकर सूक्ष्म है। वहकाल्पनिक है।दूसरी तरफ कथा-साहित्य में प्रेमचंद के बाद के युग की नारी ने भारतीय समाजकी परम्परागत मान्यताओं को तोड़ा है। उसने स्वावलम्बी बनने का प्रयास किया है औरशिक्षित होकर समाज में अपने लिए नई राहों को तलाशा है। वह भी पुरुष की तरह स्वतन्त्र,स्वच्छंद और आर्थिक दृष्टि से सबल हुई है।

संदर्भ सूची

1. डॉ॰ सौ॰जे॰एम॰ देसाई, आधुनिक हिन्दी काव्य में नारी, पृ. 38
2. वही, पृ. 39
3. डॉ॰ सौ॰जे॰एम॰ देसाई, आधुनिक हिन्दी काव्य में नारी, पृ. 40
4. वही, पृ. 41

5. वही, पृ. 43
6. डॉ॰ सौ॰जे॰एम॰ देसाई, आधुनिक हिन्दी काव्य में नारी, पृ. 44
7. डॉ॰ शिव कुमार शर्मा, हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ, पृ. 336
8. डॉ॰ देवेश ठाकुर, प्रसाद के नारी चरित्र, पृ. 149
9. मैथिलीशरण गुप्त, व्यक्ति और रचना, पृ. 127
10. डॉ॰ देवेश ठाकुर, प्रसाद के नारी चरित्र, पृ. 185
11. जयशंकर प्रसाद, कामायनी, पृ. 46

RRIJM 2015, All Rights Reserved